प्रकृति के साथ मिलन का त्योहार : संथाल जनजाति का बाहा पर्व

सबिता हांसदा

संथाल जनजाति झारखण्ड की प्रमुख जनजातियों में से एक है। झारखण्ड में संथाल जानजाति की जनसंख्या 24,54,723 (2011 की जनगणना के अनुसार) हैं। झारखण्ड राज्य के संथाल परगना क्षेत्र दुमका, गोड्डा, साहेबगंज, जामताड़ा, पाकुड़ देवघर जिलों में मुख्य रुप से निवास करती है। इसके अतिरिक्त झारखण्ड के अन्य जिला यथा राजमहल, पालामु, सरायकेला-खरसांवा, गिरीडीह, हजारीबाग, रांची, पुर्वी एवं पश्चिम सिंहभूम क्षेत्र में भी निवास करते हैं। झारखण्ड के साथ-साथ भारत के विभिन्न राज्य जैसे- बिहार, आसाम, ओडिसा, पश्चिम बंगाल आदि स्थानों पर भी निवास करते हैं।

संथाल जनजाति प्रकृति के पुजारी हैं। उनका मानना है कि नदी, पर्वत, पेड़-पौधे, पत्थर आदि में भगवान का वास स्थान होता है। प्रकृति से मिलने वाले खाद्य सामग्री का वे सेवन करने से पहले अपने पूर्वजों तथा देवी-देवताओं को अर्पित करते हैं। इस प्रकार संथाल जनजाति का प्रकृति के साथ घनिष्ट संबंध बना हुआ है। संथालों की अपनी विशिष्ट संस्कृति है, जो प्रकृति के सृष्टिकर्ता के साथ सामंजस्य स्थापित करती है और ये सामुहिकता के आधार पर इसे अभिव्यक्त करते हैं। संथालों के जीवन में पर्व-त्योहार एवं उत्सव का महत्वपूर्ण स्थान है। संथालों के पर्व-त्योहर मौसम के आधार पर अलग-अलग रंग-राग से परिपूर्ण होता है। मौसम के परिवर्तन के साथ उनके स्वर प्रस्फुटित होकर मन मस्तिष्क को आनंदित कर देता है।

संथाल समाज में यह कथन प्रचलित है-'बारह मासे तेरह पोर्व' अर्थात संथाल समाज में साल के बारह महिनों में तेरह प्रकार के पर्व मनाये जाते हैं। हर माह में अलग-अलग तरह के त्योहार होते हैं, जैसे- सक्रात, सोहराय, बाहा, रोजो सक्रात, गोम्हा, करम, आषाड़िया, जनताड़, माग्मोड़े, जोमसिम इत्यादि। संथाल सभी त्योहारों को बड़े धूम-धाम से मनाते हैं। फिर भी संथाल समाज में 'बाहा पर्व' का विशेष महत्व रहता है। क्योंकि बाहा और सोहराय ही ऐसा पर्व है, जिसमें बहन-दामाद, बेटी-दामाद को नेवता दिया जाता है। इस पर्व में बेटी को अपने मायके वालों के साथ पर्व मानाने का अवसर प्राप्त होता है। (हँसी-मजाक के रिश्ते जैसे- देवर-भाभी, जीजा-साली, दादा-दादी से पोता-पोती का संबंध आदि) बाहा पर्व एक प्रकार से होली की तरह मनाया जाता है, जिसमें वे एक दूसरे को स्वच्छ जल से सराबोर कर देते हैं। बाहा पर्व हँसी-मजाक के रिश्ते को और अधिक मजबूत कर देता है।

संथाल समाज की संस्कृति एवं सामाजिक संबंधों का प्रकृति के साथ साक्षात् मिलन के स्मृति के रुप में यह त्योहार मनाया जाता है। यह पर्व संथालों के सामुहिक ढंग से अपने पूर्वजों की स्मृति में प्रकृति प्रदत महान शक्तियों के समक्ष आराधना का भी प्रतीक है तथा 'मारांग बुरु' एवं उनकी समस्त सिष्ट के समक्ष नतमस्तक होते हैं, ताकि उनकी सृजनात्मक शक्तियों के माध्यम से उनमें खुशियों का संदेश, नया विश्वास और नया जीवन लेकर आऐं। ग्राम समूहों के द्वारा बाहा पूजा के

प्रति अन्तरमन से सहभागिता बनी रहती है, ताकि बाहा पूजा सफल हो। बाहा पर्व की पूजा नायके (पुजारी) द्वारा 'जाहेर थान' में की जाती है। 'जाहेर थान' संथालों का पूजा स्थल है जो गाँव के बीच या पास या वन स्थल के बीच जहाँ साल (सखुआ) पेड़ मौजूद होता है और पत्थरों से सीमा किया हुआ होता है। जाहेर में सखुआ पेड़ के नीचे सावड़ी घास से छप्पर बनी हुई होती है जहाँ जाहेर एरा, मरांग बुरू एवं मोड़ेको बोंगा के प्रतीक पत्थर गाड़े हुए होते हैं।

बाहा पर्व फागुन माह के नये चांद के पांचवे दिन से माह के पुर्णिमा तक ग्राम स्तर में अपनी सुविधा के अनुसार मनाया जाता है, जब सखुआ वृक्ष में फूल लग जाता है। पर्व तीन दिनों तक मनाया जाता है तथा हर दिन अलग-अलग धार्मिक अनुष्ठान की विधि सम्पन्न की जाती है। गाँव के सभी महिला और पुरुष पारंपरिक परिधान पहनकर नायके के घर जाते हैं। पुरूष परंपरागत वाद्य यंत्र बजाते हैं और महिलायें नृत्य करते हुए नायके को उसके घर से जाहेर थान ले जाते हैं। पूजा संपन्न होने के बाद पुरूष खीचड़ी बना कर खाते हैं तथा नायके से सभी लोग आशीर्वाद के रुप में सखुआ फूल को ग्रहण करते है। सखुआ फूल को महिला अपने जुड़ा में लगाती है तथा पुरुष वर्ग फूल को कान में धारण करते हैं। इसके बाद नागाड़ा-मंदर की ताल पर सभी नृत्य करते है। यह नृत्य का कार्यक्रम जाहेर से लौटने के बाद गाँव के अखाड़े में रातभर चलता है।

संथाल समाज में पर्व-त्योहारों को हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। बाहा पर्व में गाँव के सभी युवक, युवतियाँ, बच्चे, महिला और पुरुष जाहेर थान जाते है तथा मांदर, नगाड़ा के ताल के साथ नृत्य और गीत गाकर त्योहार का आंनद लेते हैं।

बाहा बोंगा के रिवाज एवं गीत का चर्चा एवं विश्लेषण :

बाहा पर्व के आगमन के पूर्व से ही संथाल समुदाय की महिलाएं अपने-अपने घरों की लिपाई-पोताई बहुत ही सुन्दर ढंग से करती हैं और घरों के दिवारों में पक्षी, फूल, पत्तियों तथा विभिन्न तरह के रंग-बिरंगी चित्र बनाते हैं। गाँव के लोग अखाड़े में एकत्रित होकर बाहा पूजा के लिये तिथि निर्धारित करते हैं। उस दिन से गाँव के सभी लोग पूजा की तैयारी में लग जाते हैं। फागुन माह (फरवरी मध्य से मार्च मध्य) में सखुआ पेड़ में नया पत्ता और कली खिलती है। ईचाग, पलाश और महुआ के फूल खिलने लगते हैं। संथाल बाहा पर्व के पूर्व फूलों का रस नहीं चूसते हैं और न ही फूल को अपने बालों में लगाते हैं। महुआ तथा आम भी नहीं खाते हैं। यदि बाहा पर्व के पहले कोई खाता है तो ग्राम देवता उसके घर नहीं जाता है। संथाल, पूजा की सांस्कृतिक विधि एवं सभी रिवाजों को सादगी से निर्वाह करते हैं। संथाली संस्कृति में बाहा पर्व है। इसकी गीतों में परंपरागत संस्कृति का दर्शन होता है। वे बाहा महोत्सव को पूर्ण शालीनता, संस्कार, सांस्कृतिक, विशिष्टता, पूर्ण सादगी, सद्भावना के साथ मनाते हैं यही जीवंत संस्कार और परंपरागत संस्कृति की धरोहर संथाल की पर्व-त्योहारों में दिखाई देती है।

बाहा पर्व तीन दिनों तक मनाई जाती है। पर्व के तीनों दिन अलग- अलग विधियों से पूजा सम्पन्न की जाती है। हर दिन के लिये अलग-अलग विनती अर्थात मंत्र का प्रयोग किया जाता है तथा अलग-अलग तरह के लोक गीत गाये जाते हैं। इन गीतों की हर बोली बाहा बोंगा के कार्यक्रम का उल्लेख करती है।

संथालों के बाहा गीत में प्रकृति का चित्रण बहुत अधिक मिलता है। विभिन्न पेड़-पौधे, फल-फूल, जीव-जन्तु का बाहा गीतों में बार-बार उल्लेख किया गया है।

बाहा गीत एवं अर्थ :-

बाहा बोंगा जेंगंद-जेंगेद	फगुन महिना फूलों से भरा हुआ

चॉदो मुलूग् एन	चाँद दिख रहा
दिशोम जाके दारे पेरेज	देश भर का पेड़ भरा
बाहा सागेन एन।	फूल खिल रहा
रास्का दिन दो सेटेरेना	खुशी का दिन पहुच गया
मुलूग् मोड़ें माहा	चाँद दिखने के पांचवें दिन
जाहेर एरा आणती आबोन	जाहेर माँ हमें बाँट रही
गोछा पेरेज बाहा।	आंचल भर के फूल।

विश्लेषण :

फागुन माह में हमारे चारों तरफ पेड़-पौधों में नयी-नयी पत्तियाँ आती है और कलियाँ लगती है। फुलों की खुशबू से हवाएँ महक उठती है। फागुन माह का चाँद दिखने के पांचवे दिन बाहा पूजा करते हैं। जाहेर आयो के नाम से सभी को फूल बाँटते हैं। वे फूल को जुड़ा से लगाकर नाचते और गाते हैं तथा खुशियाँ मनाते हैं।

बाहा पर्व का पहला दिनः-

संथाल समुदाय में बाहा पूजा का पहला दिन बहुत ही महत्वपूर्ण होता है क्योंकि पूजा संपन्न करने की विधि इसी दिन से शुरु होती है। इस दिन जाहेर सड़िम अर्थात पूजा स्थल का छत को बनाने का कार्य किया जाता है। छत बनाने का कार्य केवल अविवाहित लड़कों द्वारा उपवास रख कर कराया जाता है। पूजा स्थल को गोबर से लीपते हैं। इसके साथ-साथ जाहेर थान का चारों तरफ सफाई की जाती है। जाहेर की घेरा को भी पोचाड़ा करते हैं। इसी दिन देवी-देवताओं को स्नान कराने की विधि सम्पन्न की जाती है।

ग्राम नायके के निवास स्थान पर पूजा-अर्चना से संबंधित विभिन्न सामग्रियों जैसे-सिंदुर, तेल, धूप-बाती, सगुन सुपाड़ी अर्थात कलश, चावल आटा, दवड़ा, सूप, खाड़ाग जोनोग् एक साथ स्वच्छ स्थान पर रख देते हैं। दूसरी ओर तीर-धनुष तथा फरसा पूजा में प्रयोग किया जानेवाला हथियार को साफ करके एक साथ रख देते हैं। शाम में नायके घर में सभी पुरूष जमा होते हैं तथा एक व्यक्ति को सूप में मुट्ठी भर चावल देकर बैठाते हैं जब उसमें बोंगा प्रवेश करता है तब बोंगा से पूछा जाता है कि सभी तैयारी सही है या नहीं। बोंगा सब देखकर सहमत होता है तथा उस व्यक्ति से सूप वापस ले लेते हैं। सभी को हड़िया दिया जाता है, फिर सब अपने घर चले जाते हैं।

बाहा पूजा का दूसरा दिनः-

इस दिन नायके को अपने निवास स्थान से जाहेर थान तक नृत्य मंडली के साथ ले जाया जाता है। जाहेर थान पहुंचने के बाद सभी महिलाएं वापस लौट जाती हैं। नायके तीन व्यक्ति को पूजा के लिये फूल लाने के लिये चयन करता है। वे सखुआ फूल, महुवा फूल तथा आम फूल लाते हैं। जब वे लोग फूल लेकर आते हैं तो नायके उनके पैर धोता है तथा उन्हें सिंदुर तिलक लगा कर शुमन करता है और उन्हें पूजा के लिये बैठा देता है। एक को जाहेर आयो, दूसरा मोंड़ें को तथा तिसरा मारांग बुरु का नाम दिया जाता है और पूजा प्रारंभ की जाती है। यह पूजा जाहेर थान में स्थापित देवी-देवताओं के वेदी स्थल पर की जाती है। जाहेर आयो को मुर्गी (हेड़ाग् कालोट), मोंड़ें को सफेद बकरा या सफेद मुर्गा तथा मारंग बुरु को लाल मूर्गा की बलि चढ़ायी जाती है।

फूल लाने के क्रम में गायी जाने वाली लोक गीत :-

जा गोसाईं तोकोय माग् लेद हो रांगायनी तोला
जा गोसाईं तोकोय हालांअं लेद हो रांगायनी तोला
जा गोसाईं मारांग बुरु माग् लेद हो रांगायनी तोला
जा गोसाईं जाहेर आयो हालांअं लेद हो रांगायनी तोला।

विश्लेषण:- इस गीत में पूछा गया है कि हे देव रांगायनी पौधा को कौन काटा और इसे उठाया है। हे देव मारांग बुरु ने काटा और जाहेर माँ ने उठाया है।

पूजा के समय का बिनती अर्थात मंत्र :-

जा गोसाईं जाहेर आयो एमाम कान सुनूम सिंदूर जेंगेद-जेंगेंद
आतांग पेला मायनो माईं।
जा गोसाईं मारांग बुरु एमाम कान सुनूम सिंदूर जेंगेद-जेंगेंद
आतांग पेला मायनो माईं।
जा गोसाईं मोंड़ें को एमाम कान सुनूम सिंदूर जेंगेद-जेंगेंद
आतांग पेला मायनो माईं।

विष्लेषणः- इस मंत्र में बताया है कि हे देव मारांग बुरु, जाहेर मां और मोड़ें को आप सभी को तेल-सिंदुर दिया जा रहा है इसे स्वीकार करें।

पूजा के समय का गीत :-

जा गोसाईं तोकोय को चिया लेद हो बिर दिषोम दो,
जा गोसाईं तोकोय को सागून लेद हो नातु नोयाडोम,
जा गोसाईं मारांग बुरु चिया लेद हो बिर दिषोम दो,
जा गोसाईं जाहेर आयो सागुन लेद हो नातु नोयाडोम।

जा गोसाईं तोकोय को चिया लेद हो बिर दिषोम दो,
जा गोसाईं जोकोय को सागून लेद हो नातु नोयाडोम,
जा गोसाईं राम गेतो चिया लेद हो बिर दिषोम दो,
जा गोसाईं जाहेर आयो सागुन लेद हो नातु नोयाडोम।

विश्लेषण:- इस गीत में पूछा गया है कि हे देव किसने इस देश, गाँव को चुना है। फिर यह बताया गया कि मारांग बुरु और जाहेर माँ ने इस देश एवं गाँव को चुना है। दूसरे पद में यह कहा गया है कि हे देव इस देश एवं गाँव का चुनाव किसने किया है। हे देव इस देश का चुनाव राम ने किया है एवं इस गाँव का शगुन जाहेर आयो ने किया।

इसके साथ ही पूजा के समापन होने पर खिचड़ी बनायी जाती है तथा पूजा में शामिल सभी लोगों को प्रसाद के रुप में खिचड़ी परोसी जाती है। सभी पुरुषों के प्रसाद ग्रहण कर लेने के बाद ही महिलायें जाहेर थान आती है। पुरुष और महिलायें नायके से सखुआ फूल ग्रहण करते हैं और नृत्य एवं गीत का दौर शुरु हो जाता है।

इसके पश्चात नायके को नृत्य मंडली के साथ नृत्य करते हुए उनके घर तक पहुँचाया जाता है। घर के आंगन में नायके की पत्नि, नायके और नायके के साथ पूजा में बैठने वाले तीनों व्यक्तियों का पैर धोती है। फिर गाँव के सभी महिला-पुरुष रात भर मांदर और नागाड़ा के ताल पर नृत्य करती है तथा खुशियाँ मनाते हैं।

बाहा पूजा का तिसरा दिनः-

इस दिन गाँव के पुरुष स्नान करके नायके के घर सुबह ही जाते हैं। नायके राचा अर्थात आंगन में 'आग-राड़ा' की एवं सगुन सुपाड़ी की धार्मिक विधि को पारम्परिक तरीके से सम्पन्न किया जाता है तथा इसी के साथ बाहा सेंद्रा की धार्मिक रिवाज को सम्पन्न किया जाता है। सेंद्रा का उत्सव गाँव के निकटतम जंगल में जाकर किया जाता है। बाहा पूजा के पुर्व संथाल समुदाय के द्वारा किसी प्राणी को तीर-धनुष का निशाना नहीं बनाया जाता है और ना ही संहार किया जाता है। बाहा पूजा के पश्चात ही संथाल समुदाय में सेंद्रा महोत्सव शुरु होता है। पूर्वजों द्वारा निर्धारित विभिन्न पहाड़-पर्वतों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से सेंद्रा महोत्सव सम्पन्न किया जाता है।

आग् राड़ा अर्थात धनुष खोलने का गीत :-

जा गोसाईं तोकोय नोडोक केद हो सामानोम आग् सार
जा गोसाईं तोकोय नोडोक केद हो सामानोम क़ापी
जा गोसाईं बुयू गेतो नोडोक केद हो सामानोम आग् सार
जा गोसाईं बुयू गेतो नोडोक केद हो सामानोम क़ापी।

जा गोसाईं तोकोय कोको नेल केद हो सामानोम आग् सार
जा गोसाईं तोकोय कोको नेल केद हो सामानोम क़ापी
जा गोसाईं मोड़ें कोको नेल केद हो सामानोम आग् सार
जा गोसाईं मोड़ें कोको नेल केद हो सामानोम क़ापी।
जा गोसाईं तोकोय को नोडोक केद हो सगुन सुपाड़ी
जा गोसाईं तोकोय को नेल केद हो सगुन सुपाड़ी
जा गोसाईं बुयू गेतो नोडोक केद हो सगुन सुपाड़ी।
जा गोसाईं मोड़े को को नेल केद हो सगुन सुपाड़ी।

विशलेषणः- प्रथम पद में यह बताया गया है कि देव वीर-धनुष एवं फरसा किसने निकाला है। हे देव तीर-धनुष एवं फरसा दोनों समान बुयु ने निकाला है।

दूसरे पद के गीत में यह कहा गया है कि हे देव तीर-धनुष एवं फरसा किसने देखा। हे देव मोड़ेको ने तीर-धनुष एवं फरसा देखा।

तीसरे पद में यह बताया गया है कि हे देव सागुन सुपाड़ी (सुराही) किसने निकाला एवं इसे किसने देखा। हे देव बुयू ने निकाला एवं मोड़ेको ने इसे देखा।

सेंदरा गीत :-

जा गोसाईं तोकोय गिरा् केद हो सेंदारा दो
जा गोसाईं तोकोय बारपे़ केद हो कारका दो
जा गोसाईं राम गेचो गिरा् केद हो सेंदारा दो
जा गोसाईं लोखोन गेचो बारपे़ केद हो कारका दो।

विशलेषण:-

इस गीत से बताया गया है कि हे देव शिकार की तिथि किसने तय की तथा शिकार में किसने साथ दिया। हे देव राम ने तय किया शिकार की तिथि एवं लखन ने सहमति व्यक्त की।

संदर्भ सूची-

1. गया पाण्डे,'भारतीय जनजातीय संस्कृति', कंसैप्ट पब्लिशिंग कम्पनी नई दिल्ली
2. चन्द्रकान्त वर्मा, 'झारखण्ड के आदिवासी', के. के पब्लिकेशन, इलाहाबाद
3. चतुर्भूज साहु, 'झारखण्ड की जनजातियां', के. के. पब्लिकेशन, इलाहाबाद
4. एस.पी. शर्मा एवं जे. बी. शर्मा, कल्चर ऑफ़ इन्डियन ट्राइब्स, राधा पब्लिकेशन, नयी दिल्ली
5. Bodding, P.O. : Traditions and Institutions of the Santhals, Gyan Publihsing House, 23, Main Ansari Road, Daryaganj, New Delhi.
6. Bodding, P.O. ; 1940 : How the Santals Live, Oslo, Institute for Summenlignende Kulturferskning, (1929).
7. Bodding, P.O. ; 1929 : A Santal Dictionary. Gyan Publishing House, 23, Main Ansari Road, Daryaganj, New Delhi-110002.

संपर्क :

शोधार्थी,
मानवशास्त्र विभाग
रांची विश्वविद्यालय, रांची
hansdasabita12@gmail.com